शोध मंथन, Impact Factor 5.463 (SJIF), UGC No. 40908 ISSN: (P): 0976-5255, (e) : 2454-339X,
Vol. X, No. 1, pp (119-125), Jan-March 2019

भूमण्ड़लीकरण के दौर में उत्तर प्रदेश की थारू जनजाति का विश्लेषण

सन्दीप कुमार वर्मा
शोध छात्र, समाजशास्त्र विभाग,
लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ
Email :sandeeplu08@gmail.com

सारांश

सामाजिक–आार्थिक सम्बन्धों का सम्पूर्ण विश्व तक विस्तार वैश्वीकरण है। भारत में सन् 1991 के दौरान भूमण्डलीकरण की प्रक्रिया शुरू हुई। भूमण्डलीकरण की प्रक्रिया ने आज हर क्षेत्र को प्रभावित किया है। हमारी सरकार उदारीकरण, वैश्वीकरण और भूमण्ड़लीकरण के नाम से दलितों–वंचितों, गरीबों, आदिवासियों, श्रमिकों, किसानों, छात्रों, महिलाओं के वर्तमान एवं भविष्य की जीवनरेखा निर्धारित कर रही है। भारत की सम्पूर्ण जनसंख्या में अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या का प्रतिशत 8.6 प्रतिशत है (जनगणना 2011 के अनुसार)। वर्तमान समय में भूमण्ड़लीकरण की प्रक्रिया ने समाज के प्रत्येक वर्ग, समूह, जाति, जनजाति समुदाय को प्रभावित किया है, जिसका प्रभाव उतर प्रदेश की थारू जनजाति पर भी देखा जा सकता है। थारू जानजाति एक पित्रवंशीय, पित्रसत्तात्मक, व पित्रस्थानीय जनजाति है जो आज हिन्दु धर्म को मानती है। वर्तमान समय में थारू जनजाति की पारिवारिक संरचना में परिवर्तन देखा जा सकता है। भूमण्ड़लीकरण के दौर में थारू जनजाति में भौगोलिक गतिशीलता, शिक्षा के प्रति जागरूकता, शिक्षा का बढ़ता स्तर, युवक और युवतियों के मध्य समानता, कृषि यंत्रीकरण एवं मनोरंजन के भौतिक उपकरणों को अपनाने की प्रवत्ति, स्थानीय राजनीतिक सहभागिता और अपनी मूलभूत आवश्यकताओं के प्रति जागरूकता देखी जा सकती है।

मुख्य शब्द– *भूमण्ड़लीकरण, आदिवासी, जनजाति, थारू, अर्थव्यवस्था, आधुनिकीकरण।*

प्रस्तावना

वर्तमान समय में, मानव जीवन के अनेक पक्ष, जिन समाजों में हम रह रहे हैं, उनसे हजारों मील दूर स्थित संगठनोंऔर सामाजिक ताने–बाने से प्रभावित होने लगे हैं। इस प्रकार विश्व एक एकिक समाज व्यवस्था का रूप धारण करता जा रहा है। एक सिद्धान्त के रूप में, वैश्वीकरण एक भूमण्ड़ली सांस्कृतिक व्यवस्था के उद्भव की विवेचना है। वैश्वीकरण के अनुसार भूमण्ड़ली संस्कृति अनेक विभिन्न सामाजिक एवं सांस्कृतिक विधाओं का परिणम है। इस संबन्ध में सर्वाधिक महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि भूमण्ड़लीकरण की अवधारणा विश्व के बारे में एकल समष्टि के रूप में एक नवीन चेतना के उदभव को इंगित करती है। आज विश्व स्तर पर इस चेतना

का उदय और विस्तार होता जा रहा है कि 'विश्व' एक गतिशील संरचित परिवेश है। गिड़ेंस(1990) कहते हैं कि विभिन्न लोगों और दुनिया के विभिन्न क्षेत्रों के बीच में बढ़ती हुई अन्योन्याश्रतता या पारस्परिकता ही वैश्वीकरण है। यह पारस्परिकता सामाजिक और आार्थिक सम्बन्धों में होती है। इसमे समय और स्थान सिमट जाते हैं। हार्वे (1989) ने भी वैश्वीकरण की व्याख्या अन्योन्याश्रयता या व्यक्तियों, दोनों और देशों की पारस्परिकता के सन्दर्भ तथा समय और स्थान के फ्रेमवर्क में करते है। वेलरस्टेन (1983) कहते हैं कि वैश्वीकरण वह प्रक्रिया जिसका कारण पूंजीवाद का विस्तार और उसकी समृद्धि है। बहुत सामान्य शब्दों में वैश्वीकरण की वेलरस्टेन की परिभाषा गिड़ेंस और हार्वे से जुदा है। अगर समय और स्थान का दूरीकरण हुआ है, तो इसका कारण पूंजीवाद की विश्व अर्थव्यवस्था है। आज वैश्वीकरण का जनक पूंजीवाद है।

जनजातियों का भारतीय सभ्यता में एक महत्वपूर्ण स्थान है। जनजातियों की अपनी अलग संस्कृति, भाषा, सामाजिक व्यवस्था और निश्चित भौगोलिक क्षेत्र होता है। अधिकतर ये जंगल व पहाड़ी क्षेत्रों में निवास करते है। इनका सम्पर्क मैदानी या अन्य लोगों के साथ कम रहा है, लेकिन आवागमन व संचार के साधनों के विकास के साथ मैदानी व जनजातीय क्षेत्र के लोगों के बीच दूरियां कम हुई है। यह प्रक्रिया जनजातीय समाज की नातेदारी व पारिवारिक व्यवस्था में भी महत्वपूर्ण परिवर्तन लाई है (चौधरी, 2006)।

1994 में सम्पन्न *''पीपुल्स ऑफ इण्डिया प्रोजक्ट''* (एन्थ्रोपोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंड़िया) के एक प्रोजक्ट के तहत 635 जनजातियों समुदायों के बारें में उनके समूहों और क्षेत्रीय इकाइयों सहित उनकी विभिन्न इकाइयों का अध्ययन किया गया जिसमें जनजातियों के विकास के बारें में कई तथ्य दिये गये है जैसे जनजातिय समुदायों में एक उच्च वर्ग का उदय हो रहा है और राजनीतिक नेतृत्व में भी इन लोगों का प्रवेश हो रहा है विभिन्न स्तरों पर जनजातियों के लोग अपनी भूमिका अदा कर रहें है, जैसे गांव पंचायतों में। लड़के और लड़कियों दोनों के मामले में शिक्षा के क्षेत्र में अच्छा असर दिख रहा है। जनजातियां स्वास्थ्य और चिकित्सा की सुविधाओं का लाभ उठा रहीं हैं। इसके अलावा मृत्यु और जन्म की दर में भी लगातार गिरावट आ रही है। सरकार के द्वारा चलाई जा रही विकास योजनाओं में ये लोग हिस्सा ले रहें हैं और इनके क्षेत्रों में इलेक्ट्रानिक मीडिया भी व्यापक रूप से पहुंच रहा है।

हसन (1993) ने अपनी पुस्तक ''अफेयर ऑफ एन इण्डियन ट्राइब'' में थारू जनजाति के सभी पहलुओं का अध्ययन करते हुऐ इनमें परिवर्तन की बात करते हुए कहा कि पहले प्रथम पंचवर्षीय योजना और सामुदायिक विकास योजना का प्रभाव थारू समाज बिल्कुल नही था। परम्परागत थारू समाज में पंचायत की त्रि–व्यवस्था के पहले गांव का मुखिया 'पधान' होता था उसकी महत्वपूर्ण भूमिका होती थी लेकिन जब से पंचायत की त्रि–व्यवस्था के तहत गांवों में नियमित चुनाव होने लगे तो युवा वर्ग इन पंचायतों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने लगे और धीरे–धीरे इन पर से 'पधान' का प्रभाव घटने लगा और ये नवयुवक परम्परागत नियमों को अस्वीकार करना शुरू कर दिया। नव–यूवकों को अब अपने गोत्र के बारें में कोई स्पष्ट जानकरी नही है,

धीरे–धीरे इन पर हिन्दु संस्कृति का प्रभाव पड़ने लगा। सरकार के द्वारा शुरू की गई आरक्षण की सुविधा का लाभ प्राप्त होना शुरू हो गया हो गया। थारू समाज की परम्परागत पारिवारिक संरचना में परिवर्तन दिखने लगा इसके बावजूद थारू समुदाय में महिलाओं की सम्मान जनक स्थिति आज भी बनी हुई।

दोषी (2006) के अनुसार जनजातियों के संयुक्त परिवार टूट कर केन्द्रीय परिवार का रूप ले रहें है हो, भील, गोड़, बैगा, ड़फला और भील जनजातियों में परम्परा से बहुपत्नी परिवार रहे हैं लेकिन आधुनिकीकरण की प्रक्रिया के फलस्वरूप अब इन जनजातियों में एक विवाही परम्परा बन रही है। इसमें शिक्षा तथा सामान्य जागस्कता का प्रभाव भी अधिक हो रहा है जनजातियों की सामाजिक संरचना का मुख्य आधार गोत्र व्यवस्था है। जब–तक जनजातियाँ एक ही निश्चित भूभाग में रहतीं थीं गोत्र सामाजिक सुदृढ़ता का एक अच्छा माध्यम था लेकिन अब जनजाति समूहों के सदस्य कस्बों और शहरों में रोजगाार हेतु जाते है। इस स्थानान्तरण के कारण उन्हें गोत्र के प्रतिबन्धों से मुक्ति मिली है। अब गोत्र सामाजिक नियंत्रण का सशक्त साधन नही रह गया है राजस्थान और गुजरात के भीलों में गोत्र राजनीतिक क्षेत्र में कोई प्रभाव नहीं रखता है।

आधुनिकीकरण और भूमण्डलीकरण की प्रक्रिया ने आदिवासियों को वर्ग समुदाय बना दिया है। आधुनिकीकरण ने उनके व्यवसाय में विविधता ला दी है। वे नगरों में आकर सफेदपोश धन्धे करने लगे है। आधुनिकता का प्रभाव उनके भोजन और निवास पर भी दिखने लगा है, होटलों का खान–पान आदिवासियों को रास आने लगा है। पहनावे में परम्परागत पोशाक लुप्त होने लगी है। स्त्रियों में साड़ी का स्थान कुर्ता–कमीज ने ले लिया है और मकान की बनावट भी पक्की होती है। आधुनिकता के प्रभाव में आने से पहले आदिवासियों का मनोरंजन उनकी कला, लोक साहित्य, नाच–गान में गुजर जाता था। आज ये परम्परागत साधन नए मनोरंजन साधनों के कारण लुप्त हो रहे हैं जिसके कारण से स्थानीय संस्कषति कमजोर होती जा रही है (दोशी, 2006)

विश्लेषण

थारू, उत्तर प्रदेश की एक जनजाति है। ये लोग नैनीताल (खटीमा एवं सितारगंज तहसील) लखीमपुर खीरी, गोंड़ा, बहराइच, गोरखपुर आदि जिलों में तथा बिहार के चम्पारन और दरभंगा जिलों में एवं भारत के पूर्व में जलपाई गुड़ी (असम) के अलावा नेपाल में व्याप्त है। ये लोग कद के छोटे, पीतवर्ण, चौड़ी मुखाकृति तथा समतल नासिका वाले होते है जो मंगोल प्रजाति के लक्षण हैं। इस जनजाति के उदभव के विद्धानों में मतैक्य नही है। एक वर्ग इन्हें राजपूतों का वंशज कहता है, दूसरा इनका उद्‌गम मध्येशिया के मूल निवासी मंगोलों से बताता है और कुछ लोग इन्हें भारत–नेपाल के आदिम निवासी सिद्ध करते हैं। वस्तुतः ''थारू'' शब्द अपने पड़ोसी समुदायों के लिए विशिष्ट वनवासी जाति, धर्म संस्कृति भाषा गँवार लोकजीवन, दर्शन आदि का बोधक हो चुका है। थारू जनजाति में महिलाओं की स्थिति अच्छी होती है। पारिवारिक मामलों में महिलाओं की सलाह ली जाती है।

भूमण्डलीकरण के दौर में थारू समाज के आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में परिवर्तन हो रहे है। थारू समाज अभी भी पित्रसत्तात्मक, पित्रस्थानीय एवं पित्रवंशीय है। वैसे थारू जनजाति तीन विभिन्न समूहों में विभाजित है और ये समूह है– राना, कठेरिया और डंगेरिया। सामान्यतः ये अंतर्विवाही समूह हैं लेकिन सामाजिक पवित्तन की नई शक्तियों ने उनके इस मूल्य में कुछ हद तक परिवर्तन किया है। अब ये समूह कठोरता से अंतर्विवाह के नियम का पालन नहीं करते हैं और आजकल ये आपस में विवाह कर लेते है। विवाह में लड़के और लड़की की पसन्द का ध्यान रखा जाता है माँ–बाप अपने लड़की और लड़के का विवाह उनकी मर्जी के खिलाफ नही करते है। थारू समुदाय के युवक और युवतियों में प्रेम विवाह का प्रचलन भी आसानी देखा जा सकता है। विवाह में नातेदार–रिस्तेदारों को निमंत्रण देने में हल्दी, टाफी के अलावा अब लोग कार्ड़ का प्रयोग करने लगे हैं, लेकिन कार्ड़ का प्रयोग अभी शुरूवाती दौर में ही है। निमंत्रण और सूचना भेजने के लिए मोबाइल का प्रयोग होने लगा है, मोबाइल के माध्यम से कई शिक्षित युवक और युवतियाँ सोशल साइटों का जैसे हवाट्स एप, फेसबुक, आदि का प्रयोग भी करने करने लगे हैं। भौतिक संस्कृति का तो इस्तेमाल इन लोगों में होने लगा है क्योंकि गाँवों में अब बिजली की व्यवस्था है लोग बिजली के उपकरणों का इस्तेमाल करने लगे है। ये लोग मोबाइल, टीवी. ड़िस टीवी आदि का प्रयोग कर रहें है। यहाँ चन्दनचौकी गाँव के लोगों के अध्ययन के आधार पर मनोरंजन के साधनों के इस्तेमाल पर तथ्यों को एकत्रित किया गया है।

थारू घरों में मनोरंजन व सूचना के साधनों का विवरण

सूचना और प्रौद्योगिकी के इस युग में लोगों तक सूचना पहुंचाने और उनका मनोरजंन कराने के कई साधन या माध्यम आज बाजार में भरे पड़े है। इन सूचना और मनोरंजन की सुविधायें लोगों तक पहुंचाने वालें साधनों में जैसे टीवी, रेड़ियो, मोबाइल फोन, पेजर और इंटरनेट आदि हैं जिनमें कुछ का प्रयोग थारू समुदाय के लोगों के द्वारा भी किया जाता हैं। शोध कार्य के दौरान थारू लोगों के 3 गाँवों के 300 परिवारों को अध्ययन के लिए शामिल किया गया। इन परिवारों में प्रयोग किये जाने वाले सूचना व मनोंरजन के साधनों के बारे में प्राप्त तथ्यों का विवरण तालिका–1 में दिया जा रहा है–

तालिका–1 में थारू घरों में मनोरंजन व सूचना के साधनों का विवरण

साधन	आवृत्ति	प्रतिशत
रेडियो	15	5.00
टी0वी0	52	17.33
डी0वी0डी0	8	2.67
टाटा स्काई / डिश टी0वी0	26	8.67
दूरदर्शन डायरेक्ट प्लस	61	20.33
कोई साधन नही हैं	132	44.00
अन्य	6	2.00
योग	**300**	**100.00**

तालिका–1 से स्पष्ट होता है कि मनोरंजन के लिए 5 प्रतिशत लोग रेड़ियो का प्रयोग करते है। 17.33 प्रतिशत लोग ऐसे हैं जिनके घरों में मनोरंजन के लिए टी.वी घर में लगा हुआ हैं। ड़ी.वी.ड़ी का प्रयोग करने वाले वाले लोगों की संख्या 2.67 प्रतिशत है। टाटा स्काई/डिश टीवी का प्रयोग करने वाले घरों की संख्या 8.67 प्रतिशत है, वहीं सरकारी दूरदर्शन ड़ायरेक्ट प्लस का प्रयोग करने वाले घरों का प्रतिशत 20.33 हैं, और 44 प्रतिशत ऐसे घर है जिनके पास मनोरंजन के कोई साधन नहीं है। 2.00 ऐसे परिवार है जो उपरोक्त साधनों का प्रयोग न करके अन्य मनोरंजन के साधन का प्रयोग करते है।

इन सूचना और संचार के साधनों के माध्यम से लोगों में जागरूकता आ रही है। लोग अपने बच्चों को शिक्षा दिला रहें है और उनके भविष्य के प्रति सोंचने लगे है। शिक्षित परिवार आरक्षण का लाभ भी प्राप्त करने लगे है लेकिन अभी आरक्षण का लाभ उन्हीं को मिल रहा है जिनके परिवार में शिक्षित लोग और नौकरी करने वाले लोग है क्योंकि उनके बच्चों की उच्च शिक्षा आसानी से पूरी हो जाती है क्योंकि उनके घर की आर्थिक स्थिति अच्छी होती है। अब शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए सरकार विभिन्न प्रचार माध्यमों के द्वारा शिक्षा का महत्व लोगों को बता रही है। धीरे–धीरे लोगों में शिक्षा प्राप्त करने के प्रति नई सोच पैदा हो रही है परिणामस्वरूप युवक और युवतियाँ शिक्षा और रोजगार की तलाश में गाँवों से निकल कर शहरों की ओर गमन करने लगे है। थारू समुदाय की लड़कियाँ लड़कों की तरह बाहर दूसरे शहरों में उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए जाने लगी है और लड़कियाँ छात्रावासों में भी रहकर शिक्षा प्राप्त कर रही हैं। शोध अध्ययन के दौरान पलिया ब्लाक, लखीमपुर के 3 गाँवों के 30 परिवारों का वैयक्तिक अध्ययन किया गया जिसमें से एक गाँव चन्दनचौकी में हुए वैयक्तिक अध्ययन (case study) से स्पष्ट होगा–

चन्दनचौकी में रहने वाले 26 वर्षीय एस0के0 इलाहाबाद में रहकर सिविल सेवा परीक्षा के साथ अन्य प्रतियोगी परिक्षाओं की तैयारी कर रहे हैं। इनके परिवार में माता–पिता एल0आर0 और एम0डी0 हैं जिनकी उम्र लगभग 49 व 51 वर्ष है। एक0के0 एक भाई और दो बहन क्रमश ड़ी0के0, पी0ड़ी0 व एस0ड़ी0 है जिनकी उम्र क्रमशः 26, 18 और 16 वर्ष है। ये परिवार पित्रसत्तात्मक और हिन्दू धर्म को मानने वाला है। इस परिवार की प्रकृति एकाकी है। कृषि के बारे में जानने का प्रयास किया गया तो एस0के0 ने बताया कि हमारे पास कृषि योग्य जमीन पर्याप्त है क्योंकि मेरा परिवार बड़ा नहीं है। मेरे पास 10 बीघा खेत है जिसे मेरे पिताजी स्वयं कृषि करते है। घर में टीवी, फिज और ड़ी.वी.ड़ी है और एक पुराना ट्रैक्टर और मोटरसाइकिल भी है। 10 बीघा खेत होने की वजह से पिता जी ने ट्रैक्टर खरीद लिया था जिससे खेती करने में आसानी हो जाये। ट्रैक्टर लेने से पहले कई बार ऐसा भी हुआ जब हमें ट्रैक्टर की जरूरत थी लेकिन ट्रैक्टर खाली नहीं मिले और एक बार खेत की जुताई हो जाने के बाद फिर से वर्षा होने की वजह से कुछ दिन के बाद फिर से हमें खेत की जुताई करनी पड़ती थी ऐसी ही समस्याओं के लिए पिताजी ने ट्रैक्टर खरीद लिया उसके बाद खेती करने में सुविधा प्राप्त होने लगी। हमारे पिताजी ट्रैक्टर से अपना कार्य करने के बाद दूसरों का कार्य भी कर देते है। ट्रैक्टर जब पिता

जी ने जब ट्रैक्टर बैंक से ऋण लेकर खरीदा था क्योंकि ट्रैक्टर खरीदने के लिए हमारे पास रूपया नही था। बैंक से ऋण आसानी से मिल गया था अभी भी उसकी किस्तें मेरे पिताजी जमा करते हैं। हम लोग फसल अच्छी पैदा करते है। अच्छी पैदावार होने पर मेरे पिताजी फसल को मण्डी में अधिक भाव मिलने पर बेंच देते हैं। अब मेरी खेती मेरे खुद के ट्रैक्टर से ही होती है। कृषि से खाली होने के बाद मेरे पिताजी बाहर का कार्य भी कर लेते है। किसी का कुछ सामान कहीं ले जाना हो या कुछ बाहर पलिया से लाना हो तो पिताजी खुद ट्रैक्टर लेकर जाते हैं। हमारे पिताजी हम लोगों को खेती का काम करने नही देते है। वो कहते हैं कि खेती का काम करने के लिए मै खुद अभी हूँ, तुम सब अभी पढ़ो–लिखो। पढ़–लिखकर कुछ बन जाओं। हमारे घर में शिक्षा के प्रति किसी प्रकार का भेद भाव नहीं किया जाता है। हमारे माता–पिता हम लोगों को बराबर मानते हैं। कभी भी लड़कियों और लड़कों में कभी कोई फर्क नहीं किया जाता है। दोनों को बराबर षिक्षा देने की कोशिश की जाती है। मेरे भाई और बहिन सभी लोग प्राइवेट स्कूल में शिक्षा प्राप्त की है। हाईस्कूल की शिक्षा के बाद सरकारी स्कूल में पढ़ना शुरू किया। हम सभी की शिक्षा पर मेरे माता–पिता ध्यान देते हैं वो शिक्षा का महत्व समझते है। मेरे माता–पिता ने भी प्राथमिक स्तर की शिक्षा ग्रहण की है, जिसकी वजह से वो शिक्षा का महत्व समझते है, इसलिए वो हम सभी को शिक्षित कर नौकरी या धन्धा करवाना चाहते हैं। उनका कहना है कि अगर उच्च शिक्षा प्राप्त करने के बाद भी नौकरी नही मिलेगी तो फिर कोई धन्धा करवांऊगा। हमने फैजाबाद में रहकर बी.एस.सी. कृषि से की है और अब इसी विषय से ही एम.एस.सी करना चाहता हूँ। हमारा बड़ा भाई डी0आर0 भी एम.ए. की शिक्षा प्राप्त कर चुका है और प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करता है। उसने एक दो बार वो साक्षात्कार भी दिया है लेकिन अभी सफलता प्राप्त नहीं हो पा रही है। मेरे बड़े भाई का मानना है कि मै नौकरी तो जरूर पाकर ही रहूँगा जब तक मिल नहीं जायेगी तब तक मेहनत करता रहूँगा। मेरी दोनों छोटी बहनें पढ़ाई कर रहीं है। एक बहन बी.ए. की शिक्षा प्राप्त कर रही है उसके बाद वो बी.एड. या बी.टी.सी करना चाहती है जिससे टीचर बन सके है। मेरी सबसे छोटी वाली बहिन अभी 12वीं में ही पढ़ रही है। इस तरह मेरे घर में सब शिक्षा ही प्राप्त कर रहे हैं।

एस0के0 से जब उसकी शिक्षा के बारें में पूछा गया तो कहता है कि शिक्षा के दौरान हम को आरक्षण का लाभ भी मिला है। हाईस्कूल से लेकर बी.एस.सी तक मैने छात्रवृत्ति का लाभ लिया और कक्षा में प्रवेश के समय भी हम लोगों का शुल्क भी कम लिया गया क्योंकि हम लोग जनजातीय समुदाय में आते है। हमने छात्रावास में रहकर पढ़ाई की है वहाँ भी छात्रावास के आवंटन में भी हम लोगों से शुल्क कम लिया गया है।

यह वैयक्तिक अध्ययन एक अपवाद नही है बल्कि ऐसे अन्य अध्ययनो में से यह एक अध्ययन है कई अध्ययनों में ऐसा ही प्रभाव पाया गया है।

निष्कर्ष

उपरोक्त विश्लेषण में प्रयुक्त तथ्यों से स्पष्ट होता है कि थारू समाज में परिवर्तन हो रहा है। भूमंड़लीकरण ने इस परिवर्तन की प्रक्रिया को तेज किया है। थारू समाज की पारिवारिक

व सामाजिक संरचना में परिवर्तन होने लगा है। एकाकी परिवारों का उदय हो रहा है, हलांकि संयुक्त परिवारों की संख्या अभी भी अधिक है फिर नौकरी और शिक्षा के कारण भी संयुक्त परिवार टूट कर एकाकी परिवारों में बदल रहे हैं। थारू समुदाय में धीरे–धीरे परिवार में मुखिया का प्रभाव कम हो रहा है। शिक्षा के प्रभाव से लोगों में जागरूकता आ रही है माता–पिता बच्चों को शिक्षा दिला रहे है। शिक्षा में आरक्षण का लाभ इन लोगों को प्राप्त हो रहा है, आरक्षण का लाभ उठाकर ये आगे बढ़ रहे हैं। उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए युवक और युवतियाँ दूसरे शहर में जाने लगे है, छात्रावासों में रहकर शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। शिक्षा प्राप्त करने में लड़के और लड़कियों के मध्य भेदभाव कम हो रहा है, लड़कियाँ भी उच्च शिक्षा प्राप्त कर रही हैं। अधिकतर थारू गाँवं पक्की सड़क के माध्यम से मुख्य मार्ग से जुडे हुए है। इन गाँवों बिजली की व्यवस्था भी हो गई है, कुछ घरों में बिजली का कनेक्शन भी है। पंचायतों के माध्यम से पीने के पानी के लिए सरकारी नल का इस्तेमाल हो रहा है जिन परिवारों की आर्थिक स्थिति अच्छी है उनके घरों में निजी नल भी लगे हुए है। थारू समुदाय के लोग मनोरंजन प्रिय है। मनोरंजन के आधुनिक उपकरणों का इनके घरों में देखा जा सकता है, अधिकतर घरों में डी.डी. डायरेक्ट प्लस लगा हुई है। कुछ घरों में टाटा स्काई भी लगा हुआ है लेकिन ऐसे परिवारों की संख्या कम है। कृषि में यंत्रों का प्रयोग हो रहा है। थारू समुदाय के लोग शहरी संस्कृति को अपनाने की कोशिश कर रहे है। अधिकतर परिवारों में मोबाइल का प्रयोग बात करने के अलावा मनोंरंजन और सूचना प्राप्त करने के लिए भी किया जा रहा है।

सन्दर्भ ग्रंथ

1 चौधरी, एस.के. 2013, *' 'द कोंध कान्स्टीट्यूट ए ट्राइब द क्वेंश्चन आफ आइडेन्टिटी* विनय कुमार श्री वास्तव (सम्पा.), ट्राइब्स इन इण्डिया' कान्स्सेप्टस इन्स्टीट्यूट एण्ड प्रैक्टिस, नई दिल्लीः सीरियल्स पब्लिकेशन.

2 दोशी, एस.एल. 2006, *समकालीन मानवशास्त्र*, जयपुर प्रकाशन

3 श्रीवास्तव, एस.के. 1987, *' 'सम इश्युज इन द एंथ्रोपालाजी आफ डेवलपमेंन्ट'* मैन इन इण्डिया. वाल्यूम 67, नं 4

4 हसनैन, नदीम. 1990, *''जनजातीय भारत'* नई दिल्ली : जवाहर पब्लिशर्स ऐंड डिस्ट्रीब्यूटर्स. **पेज 128–129**

5 हसन, अमीर. 1971, *'ए बन्च आफ वाइल्ड फ्लावर्स एण्ड़ अदर एसे*. लखनऊ : एथनोग्राफिक एण्ड़ फॉल्क कल्चर सोसाइटी 1993, ''अफेयर्स आफ एन इंड़ियन ट़ाइब. न्यू रायल बुक पब्लिकेशन्स, लखनऊ. **पेज 6–17**

6 रावत, हरिकृष्ण. 1998, *'समाजशास्त्र विश्वकोश'* नई दिल्ली : रावत पब्लिकेशन्स. **पेज 151**

7 दोशी, एस.एल. 2002, *'आधुनिकता, उत्तर–आधुनिकता एवं नव–समाजशास्त्रीय सिद्धान्त*, नई दिल्ली : रावत पब्लिकेशन्स, **पेज 316–318**